Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 5 | MAY 2024

राजनीतिक धरातल पर कार्ल मार्क्स के विचारों का चिंतन : एक विशेष

जेठूराम [1]

[1] **अतिथि व्याख्याता विद्या सम्बल योजनान्तर्गत (vsy), राजकीय कन्या महाविद्यालय बडा गुडा (सोजत सिटी) पाली (राजस्थान).**

ABSTRACT:

सम्पूर्ण राजनीतिक चिन्तन की सतत विचारधारायें एक अवधि तथा एक निश्चित वातावरण तक अपने प्रभाव को इस जैविक विश्व में कायम रखकर अपने महत्व तथा प्रभाव को सदैव ही दर्शाती रही हैं। राजनीतिक चिन्तन के रूप में कार्ल मार्क्स को वैज्ञानिक समाजवाद, तथा नव-मानववाद के व्याख्याकार के रूप में जाना जाता है। मार्क्स ने राजनीतिक धरातल पर अवस्थित होकर वैज्ञानिक तरीके से समाजवादी व्याख्या की, जिसने पूरे विश्व में हलचल मचा दी। यह कहा जा सकता है कि जितना मार्क्स के विचारों ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित किया, उतना अन्य किसी दार्शनिक के विचारों ने नहीं किया होगा। मार्क्सवाद दार्शनिक होने के साथ-साथ व्यवहारिक भी रहे है। यह पूँजीवादी शोषण को समाप्त करने के लिए श्रमिकों के समक्ष भी एक विश्लेषणात्मक पद्धति के साथ उभरे है।

मार्क्स एक प्रगतिशील राजनीतिक दार्शनिक रहे हैं जिसने समाज व्यवस्था के अन्तर्गत अन्याय की जड़ें खोजने तथा उसके सक्रिय प्रतिकार पर बल दिया है। यदि विश्व स्तर पर मार्क्स एक नई विचारधारा का सूत्रपात करते हैं, तो इसमें कोई संशय नहीं। भारतीय स्तर पर वे वामपन्थी राजनीति का दर्शन प्रस्तुत करते हैं, मार्क्स के दर्शन को भारतीयों के सम्मुख रखने के पूर्व एम.एन. राय ने जो उसमें मानवता को प्रवेश कराया हैं वहीं इनका मार्क्सवादिता में नवीनीकरण है।

इस प्रकार मार्क्स के राजनीतिक धरातल पर जो विशिष्ट वैचारिक सिद्धांत है व संपूर्ण सृष्टि को एक नया आयाम देने हेतु सदा से विशिष्ट रहे हैं और आगे भी रहेंगे।

KEYWORDS:

राजनीतिक, धरातल, कॉल मार्क्स, आर्थिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, विचार, चिंतन।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
13th May 2024	15th May 2024

प्रस्तावना

राजनीतिक चिन्तकों का प्रादुर्भाव शून्य से नहीं होता। वे अपने युग की बौद्धिक मणि हुआ करते हैं। उनका राजनीतिक चिंतन समकालीन युग की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों की उपज होता है। यह एक -ऐसी तथ्यात्मक स्थिति है जो संसार के सभी राजनीतिक चिन्तकों के सम्बन्ध में सत्य है। कार्ल मार्क्स इसके अपवाद नहीं है। वह आधुनिक काल के ऐसे महान समाजवादी चिन्तक हैं जिनके चिन्तन की तरंगें न केवल अपने युग की परिस्थितियों की अपितु समकालीन युग की भी समस्याओं व आकांक्षाओं की पूर्ति का दिशा दर्शन भी है। नवीन मानव समाज के विद्वत कार्ल मार्क्स आधुनिक युग के ऐसे दार्शनिक है जिसने न केवल समाजवादी विचारधारा का प्रतिपादन किया, अपितु सामाजिक और आर्थिक स्वरूप में परिवर्तन लाने के लिए वैज्ञानिक नियमों की खोज भी की। उनकी अमर रचनाओं को समाजवादी विचारों की खान माना जाता है। यह सच है कि कार्ल मार्क्स के विचारों को एकदम मौलिक नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उसके पूर्व अनेक अंग्रेज तथा फ्रेंच विचारक हुए जिनके द्वारा समाज वादी विचार व्यक्त किये जा चुके थे। इनमें मुख्य थे रॉबर्ट ओवेन, सेंट साइमन, पूद्यों, चार्ल्स फूरियर, लुई ब्लॉ आदि।

मार्क्स के राजनीतिक धरातल पर अवस्थित विचार नैतिक आचरण एक अंग है। जो आचरण में वृद्धि तथा उसका निरीक्षण एवं परीक्षण करने में सक्षम होते है। मार्क्स की नैतिकता आधारित सोच अपनी वैज्ञानिकता के कारण अन्य सभी के बौद्धिक मन्तव्यों से अन्तर धारण करते है।

मार्क्स के जीवन-वृत्त से संपृक्त मुक्ता

5 मई, 1818 ई० को त्रियेर (ट्रेर) नगर में जन्मे कार्ल मार्क्स हेनरिक मार्क्स के पुत्र थे। उनका पूरा परिवार यहूदी था। कार्ल मार्क्स के दादा और ताऊ यहूदियों के पुरोहित थे। उनकी माँ हालैंड के उस प्रेसवर्ग परिवार से थी, जिसके यहाँ भी यहूदियों की पुरोहिताई का काम होता था। छोटा-बड़ा व्यापार और पुरोहिती आम तौर से यूरोप में यहुदियों का व्यवसाय था। लेकिन मार्क्स के पिता ने अपने परंपरागत व्यवसाय को छोड़कर ट्रेर के एक अच्छे वकील के पेशे को अपनाया। शिक्षा-दीक्षा में पिछड़ी हुई उनकी मां आध्यात्मिक वृत्त की महिला थीं। माता-पिता का जीवन बड़ा शान्ति और सुखमय था। इसलिए मार्क्स का बाल्यकाल बड़ी स्वतंत्रता तथा निश्चिंतता में बीता। माता-पिता का प्रेम और घर की खुशहाली बालक कार्ल मार्क्स को विरासत में मिली थी।" उनको बचपन में एक बहुत ही प्रेरक, उत्साहवर्द्धक और ममतापूर्ण सम्पन्नता भरा वातावरण मिला, जिसके फलस्वरूप उन्होंने अपने जीवन में संपूर्ण सुख सुविधाओं को प्राप्त किया उनके बौद्धिक विकास में उनके पिता का महत्वपूर्ण हाथ रहा। 25 अगस्त 1825 को उन्होंने स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात बोन यूनिवर्सिटी में प्रवेश लेकर न्यायशास्त्र दर्शन एवं इतिहास का गंभीर अध्ययन किया। जिसने उनकी राजनीतिक क्षेत्र में भी रुचि को प्रगाढ़ स्वरूप प्रदान किया। कानून के पाठ्यक्रम के अलावा ग्रीक और रोमन के पुराण शास्त्र और होमर एवं आधुनिक काल के इतिहास की कक्षाओं में भी वह शरीक हुए। इसी दौरान जेनी के साथ उनकी सगाई हुई। जो अत्यधिक समृद्ध परिवार की महिला थीं। कार्ल मार्क्स अपने जीवन में अनेक प्रकार से अध्ययन कर पीएचडी की उपाधि भी प्राप्त की जिसके बाद उनकी प्रोफेसर बनने की इच्छा हुई लेकिन सरकार की प्रतिगामी नीतियों के कारण उनका हदय निराशा से भर गया और उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। लेकिन विभिन्न विषमताओं के कारण अनेक अनुभवों के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र को भी छोड़ दिया। पर इस क्षेत्र ने उन्हें राजनीतिक अर्थशास्त्र की ओर रुचि प्रदान की और उनके विचारों में राजनीतिक धरातल व्याप्त हो गया।

कॉल मार्क्स के राजनैतिक विचारों का दार्शनिक आधार

मार्क्स ने सर्वहारा के वर्ग संघर्ष के सामान्यीकरण के आधार पर एक मूलतः न्याय दर्शन द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद का निर्माण किया। मार्क्सवादी दर्शन ने लेनिन की कृतियों में जिनमें उन्होंने नये ऐतिहासिक युग का विश्लेषण दिया, आगे विकास पाया। एक जीवन्त और रचनात्मक सिद्धान्त के रूप में मार्क्सवादी लेनिनवादी दर्शन सम्पूर्ण विश्व में

ऐतिहासिक अनुभव तथा प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों उपलब्धियों के आधार पर विकसित हुआ है। द्वन्द्वात्मक और भौतिकवाद मार्क्स, एंगेल्स के सिद्धान्त का दार्शनिक आधार प्रकृति समाज तथा मानव चिन्तन के विकास के अत्यन्त सामान्य नियमों का विज्ञान है।

मार्क्स विश्व को संज्ञेय मानते है। उनके अनुसार विश्व वस्तुगत रूप से मानव मस्तिष्क के बाहर और उससे स्वतन्त्र रूप से अस्तित्वमान है परन्तु उसकी विशेषता यह है कि वह हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करती है और अपने अनुरूप संवेदनायें उत्पन्न करती है। यही हमारे ज्ञान का मूल आधार है। लेनिन लिखते हैं कि "हम भूत द्रव्य के या गति के रूपों के बारे में संवेदना के सिवा और किसी के द्वारा कुछ नहीं जान सकते हैं, संवेदन हमारे, - अंगों पर गतिमान भूत-द्रव्य की क्रिया से उत्पन्न होते हैं।

मार्क्सवाद मानव संज्ञान को सामाजिक विकास के एक उत्पाद के रूप में, वास्तविकता का मानव मस्तिष्क में परावर्तन मानता है। आशय यह कि हम विश्व और उसके विकास के नियमों को जान समझ सकते है और उनका प्रयोग मानवता की समस्याओं के समाधान तथा उसके सर्वोतोन्मुखी कल्याण के लिए कर सकते हैं उल्लेखनीय है कि मार्क्सवाद इसी परिप्रेक्ष्य में जीवन्त एवं प्रासंगिक विचारवाद है, जो वस्तुगत यर्थाथ के वस्तुनिष्ठ संज्ञान पर आधारित है साथ ही वह समग्र मानवता के कल्याण का व्यवहारिक मार्गदर्शन करता, है। अतः निश्चित ही उनके विचारों की दार्शनिकता को यदि गूढ़ता से समझा जाए तो कल्याणकारी शासन जो प्रजा के लिए हितकारी हो, विकासशील हो, सतत हो इसी की ओर काल मार्क्स ने अपना मंतव्य इंगित किया है।

कार्ल मार्क्स के विचारों में ऐतिहासिक भौतिकवाद

मार्क्स लेनिनवादी दर्शन का एक संघटक अंग समाज की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। युगों-युगों से लोगों की जिज्ञासा रही है कि, समाज क्या है? उसकी उत्पत्ति कैसे हुयी? उसका विकास कैसे होता है? उसके विकास की नियम संगतियाँ क्या है? इतिहास राजनीति अर्थशास्त्र, न्याय शास्त्र आदि ऐसेसमाज के ठोस विज्ञानों से भिन्न ऐतिहासिक भौतिकवाद समाजिक विज्ञान के सबसे सामान्य नियमों का अध्ययन करता है।"

मार्क्स और एंगेल्स ऐतिहासिक भौतिकवाद अथवा इतिहास की भौतिकवादी समझ के संस्थापक थे जिन्होंने समाज पर प्रचलित दृष्टिकोणों में क्रान्ति ला दी। उनके ध्येय को लेनिन ने जारी रखा इस क्रान्ति के फलस्वरूप इतिहास की अवैज्ञानिक, प्रत्ययवादी समझ का स्थान वैज्ञानिक भौतिकवादी समझ ने ले लिया। पूर्व मार्क्सवादीयों चितंको का ख्याल था कि इतिहास का निर्माण महान पुरूषों की चेतना और इच्छा से होता है। इसमें उन्होंनें निष्कर्ष किया कि समाज का विकास विचारों सिद्धान्तों पर निर्भर करता है। ऐसे विचार भी विद्यमान थे जिनके अनुसार समाज के विकास के जीवन का संचालन किन्हीं अलौकिक दिव्य शक्तियों द्वारा होता है। ये शक्तियाँ ही मानों लोगों के आय का निर्धारण तथा उनके कार्यो को प्रेरित करती है। ये सभी विचार प्रत्ययवादी थे।

मार्क्स और एंगेल्स ने दिखाया कि राजनीति विज्ञान और कला में – लगने से पहले लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान की अपनी आवश्यकताएँ पूरी करनी पड़ती है। दूसरे शब्दों में लोगों के जीवन भी भौतिक परिस्थितियां या उनका सामाजिक जीवन उनके आत्मिक हितों, चेतना सिद्धों से पथ में उन सब चीजों का निर्धारित करते है जो समाज के आत्मिक जीवन की अंतर्वस्तु है।

लेनिन के शब्दों में उत्पादन पद्धति समाज का ऐसा "कंकाल" है जो "मांस और रक्त" से यानी सभी अन्य सामाजिक परिघटनाओं संबन्धों और संख्याओं से ढका हुआ है। कुल मिलाकर वे एक जीवित समष्टि समाज की निश्चित प्रणाली, निश्चित सामाजिक आर्थिक प्रणाली साकार करते है।

सामाजिक आर्थिक प्रणाली समाज का एक निश्चित रूप एक ऐसी अखंड सामाजिक प्रणाली है, जो प्रदत्त उत्पादन पद्धति के आधार पर अपने विशिष्ट नियमों के अनुसार काम और विकास करती है। मार्क्स सामाजिक विकास के आर्थिक निर्धारणवादी सिद्धान्त का प्रतिपादक करते है जिसका अर्थ यह है कि भौतिक उत्पादन के विकास से सामाजिक विकास निर्धारित होता है।

कार्ल मार्क्स के विचारों में राज्य सम्बन्धी अवधारणा

राजनीतिक चिन्तन के प्रारम्भ से ही राज्य के प्रकृति तथा उसके कार्य क्षेत्र का विवेचन राजनीतिक सिद्धान्त का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय रहा है, परन्तु इस सम्बन्ध में विचारकों में काफी मतभेद प्राप्त होता आया है। प्राचीन काल में और महययुग में राज्य की व्याख्या धर्मशास्त्रीय तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण से की जाती थी। प्राचीन काल से ही यह विचार भी प्रतिपादित किया जाता रहा है कि राज्य का जन्म एक प्रकार की संविदा अथवा करार का परिणाम है। आरम्भिक बौद्धों का सोचना था कि कभी सारे विश्व में स्वर्ण युग था, मगर बाद में सामाजिक असमानता, छल, कपट चोरी आदि बुराईया पैदा हो गयी। जिन्हे खत्म होने के लिए ही लोगों ने राजा का शासन स्थापित किया।

मार्क्स राज्य के उद्भव तथा विकास, चरित्र एवं सार तत्व, एक प्रकार के राज्य का दूसरे प्रकार के राज्य द्वारा स्थान ले लिये जाने तथा उसके विलुप्त होने की ऐतिहासिक प्रक्रिया पर सुसंगत रूप से विचार करता है। उसने 'क्रिटिक आफ हीगेल्स फिलासफी आफ राइट' 'जर्मन विचारधारा लुई बोनापार्ट का अठठारहवीं बूमेर गोथा कार्यक्रम की आलोचना फ्रांस में गृहयुद्ध (गुडरिसे) तथा कम्युनिष्ट घोषणा पत्र और अन्य रचनाओं में भी अपने राज्य एवं राज्य सत्ता सम्बन्धी विचारों को स्पष्ट किया। फ्रेडरिक एंगेल्स ने एन्टी डयूहरिंग तथा परिवार व्यक्तिगत सम्पत्ति एवं राज्य की उत्पत्ति नामक ग्रन्थों में राज्य की मार्क्सवादी धारणा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है।

मार्क्स के राज्य संबंधी धारणा का आधार दार्शनिक न होकर पूर्णतया भौतिकवादी है। वह राज्यं की व्याख्या वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त तथा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या के आधार पर करता है। मार्क्स ने अपने आरोहण पद्धति के अनुसार राज्य को धनी वर्ग अथवा समाज की प्रबल आर्थिक शक्तियों का उपकरंण कहा। मार्क्स के अनुसार राज्य द्वारा निर्मित और संघारित सामूहिकता झूठी और पाखण्डपूर्ण होती है। एक शब्द में राजनीतिक उन्मुक्ति निजी जीवन की अहन्तावादी प्रवृत्ति का अन्त नहीं करती बल्कि मात्र एक कानूनी ढांचा प्रदान करती है।

मार्क्स समस्याओं की जड़ समाज में व्याप्त संघर्षरत मानवों और उन पर आश्रित शोषकों दमनकारियों के व्यवस्थाओं में पाता है। वह उनका समाधान भी उसी स्तर पर देने का प्रयास करता है।

राज्य नामक संस्था का उदय कैसे हुआ? इस प्रश्न पर विचार करते हुए मार्क्स का कहना है कि, "इतिहास में राज्य का अस्तित्व सर्वदा नहीं रहा है। इसका आर्विभाव सामाजिक विकास के एक विशेष चरण में हुआ है। वह मनुष्य की चेतना की उपज न होकर उसकी चेतना से स्वतन्त्र विशिष्ट भौतिक परिस्थितियो की उपज है"।

फ्रेडरिक एंगेल्स ने लिखा है कि, "राज्य ऐसी संस्था नहीं है जो समाज पर अति प्राकृतिक ताकत के द्वारा लादी गई हो और वह न किसी नैतिक विचार का मूर्त रूप या विवेक का मूर्त और वास्तविक रूप किसी नैतिक विचार का मूर्त रूप या विवेक का मूर्त और वास्तविक रूप है जैसा कि हेगेल कहते है बल्कि कहना चाहिए कि वह समाज की उपज है जो उसके विकास की एक निश्चित अवस्था में पैदा होता है। वह इस बात की स्वीकारोत्ति है कि यह समाज हल न होने वाले अन्तविरोधों में फँस गया है। वह ऐसे विरोधों से विदित हो गया है कि जिनका समाधान नहीं हो सकता और जिन्हें दूर करना, सामर्थ्य के बाहर है। परन्तु ये विरोध परस्पर विरोधी आर्थिक हितों वाले वर्ग के संघर्ष में अपने को और पूरे समाज को नष्ट न कर डालें, इसलिए एक ऐसी शक्ति जो मालूम पड़े कि समाज से ऊपर खड़ी है, आवश्यक बन गयी ताकि इस संघर्ष को हल्का किया जा सके। संघर्षशील शक्तियों को व्यवस्था की सीमाओं के भीतर रखा जा सके। वह शक्ति जो स्वयं समाज में पैदा होती है, परन्तु समाजोपरि स्थान ग्रहण कर लेती है और उससे अधिकाधिक पृथक होती जाती है, राज्य है"।

राज्य के उद्भव के वर्णन के बाद मार्क्स यह स्थापित करते है कि राज्य समाज का केवल अधिरचनात्मक पहलू है उनके अनुसार राज्य समाज के आर्थिक संरचना के नींव पर कायम ऊपरी ढाँचा है। उसकी आवश्यकता, उसका अस्तित्व अन्ततः उसका स्वरूप आर्थिक संरचना पर आधारित होता है। मार्क्स ने लिखा है, "अपने जीवन के सामाजिक उत्पादन में मनुष्य ऐसे निश्चित संबंधों में बधते है, जो अपरिहार्य एवं उनकी इच्छा से स्वतन्त्र होते है। उत्पादन के ये संबन्ध उत्पादन की भौतिक शक्तियों के विकास की एक निश्चित मंजिल के अनुरूप होता है। इन उत्पादन सम्बन्धों का पूर्ण समाहार समाज का आर्थिक ढाँचा है, वह वास्तविक मूलाधार है जिस पर कानून और राजनीति का ऊपरी ढाँचा खड़ा हो जाता है"।

मार्क्स समाज के भौतिक विकास को ही इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं का अंतिम कारण एवं निर्णायक शक्ति मानता है। एगेल्स कहते है- "सभी सामजिक परिवर्तनो और राजनीतिक क्रान्तियो के अंतिम कारण उत्पादन तथा विनिमय प्रणाली में होने वाले परिवर्तनो में निहित है।"

मार्क्सवाद ने राज्य की ऐतिहासिक भौतिकवादी व्याख्या के जरिये स्पष्ट किया कि समाज की अर्थव्यवस्था वास्तविक मूलाधार के रूप में राज्य और कानून की अधिरचना के लिए प्राथमिक एवं निर्णायक तत्व है, परन्तु आर्थिक संरचना और राज्य का संबंध यान्त्रिक नहीं बल्कि द्वन्द्वात्मक होता है। राज्य सापेक्ष रूप से स्वतंत्र होता है। वह अपने मूलाधार आर्थिक व्यवस्था पर सक्रिय प्रभाव भी डालता है। समाज में विकास की समूची विराट प्रक्रिया अन्योन्यक्रिया के रूप में चलती है अर्थात आर्थिक व्यवस्था जहाँ आधार है, इस रूप में वह निर्णाक एवं प्राथमिक तत्व होता है, वहीं राज्य एक अधिरचना है और वह गौण परन्तु सक्रिय प्रभाव डालने वाला होता है। इस प्रकार मार्क्सवाद का आधार अधिरचना और समाज के अन्यान्य अवयवों को एक द्वन्द्वात्मक समष्टि का अंश मानते हुए उनकी वास्तविक भूमिका का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है।

कार्ल मार्क्स के विचारों में पूंजीवादी राज्य का विश्लेषण

राज्य को वर्ग शोषण का साधन सिद्ध करने के पश्चात् मार्क्स राज्य को वर्ग पूँजीवादी राज्य का विश्लेषण करता है और यह बताता है कि, वह किस प्रकार पूँजीवाद के हितों की रक्षा करने और उसे श्रमिकों के शोषण करने में सहायता पहुँचाता है। मार्क्स एंगेल्स के अनुसार, "राज्य के अन्तर्विरोध पूर्ण प्रकृति सर्वाधिक पूजीवादी समाज में ही प्रकट होती है समस्त जनतांत्रिक विकास के बावजूद राज्य की प्रकृति पूँजीवादी व्यवस्था में वही रहती है जो मेनिफेस्टों में दर्शायी गयी है अर्थात् समस्त पूँजीपति वर्ग के सामान्य कारोबार की देख-रेख करने वाली समिति स्टेट एण्ड रिवोल्युशन में लेनिन ने भी इसी विचार का प्रतिपादन और अनुमोदन किया है। वह लिखता है प्रत्येक कुछ वर्षों में यह निर्णय करना की शासकीय वर्ग का कौन सदस्य संसद के माध्यम से जनता को दमित और पद दमित करेगा, यही बूर्जुआ संसदवाद का सार तत्व है चाहे व्यवस्था संवैधानिक संसदीय राजतंत्रीय की हो, चाहे सर्वाधिक जनतांत्रिक गणतंत्रों की मार्क्स- एंगेल्स के अनुसार, विधायी संबंधों और राज्य के स्वरूपों का अवरोध अपने आप में, सामान्य मानसिक (सांस्कृतिक) विकास के आधार पर नहीं, बल्कि जीवन की उन भौतिक परिस्थितियों के आधार पर ही हो सकता है जिन्हें समुचित रूप में हेगेल सिविल सोसाइटी कहलाता है"।

निष्कर्ष

अंततः कह सकते हैं कि मार्क्स का राजनीतिक चिंतन भौतिकवाद, द्वंद्ववाद, समाज, मानव, उसकी स्वतंत्रता, मानव का इतिहास, समाज की आर्थिक व्याख्या, राज्य का मानवीय हित आदि के प्रयोग तथा वर्ग विहीन समाज की स्थापना के द्वारा, जनकल्याण की भावना से युक्त रहा है। उन्होंने अपने सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन परिस्थितियों में समस्याओं का निराकरण करने के लिए विभिन्न प्रयास किये हैं। मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद समाज में सर्वहारा वर्ग द्वारा की जाने वाली क्रांति का अंतिम उद्देश्य वर्गविहीन, राज्यविहीन, समाजवादी राज्य की स्थापना करना है। लेकिन यह समाज क्रांति होते ही स्थापित नहीं हो जाता बल्कि इसे समय समय पर इसकी स्थापना के लिए कदम बढ़ाने पड़ते हैं। इस प्रकार मार्क्स का राजनीतिक धरातल नैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, भौतिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक रहा है। जो जन सामान्य के कल्याण के लिए अपेक्षित है।

REFERENCES

1. मार्क्स : एक जीवनी, दे स्तेपानोवा, प्रगति प्रकाशन मास्को, 1975.

2. सामाजिक और राजनीतिक ज्ञान मार्क्सवाद – लेनिनवाद क्या हैं? प्रगति प्रकाशन मास्को, 1988.

3. भारतीय राजनीतिक चिंतन - जवाहर लाल द्विवेदी, रतन प्रकाश मंदिर आगरा, 1993.

4. भारतीय राजनीतिक चिंतन - बी. पी. वर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 1987.

5. आधुनिक राजनीतिक चिंतन का इतिहास - बी एल फडिया, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 2001.

6. मार्क्सवादी समाज चिंतन - डा जे.जे. सिंह मिश्रा, ट्रेनिंग कॉर्पोरेशन वाराणसी, 2002.

7. कार्ल मार्क्स – राहुल सांकृत्यायन, प्राक्कथन किताबमहल एजेंसी, 2004.